सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

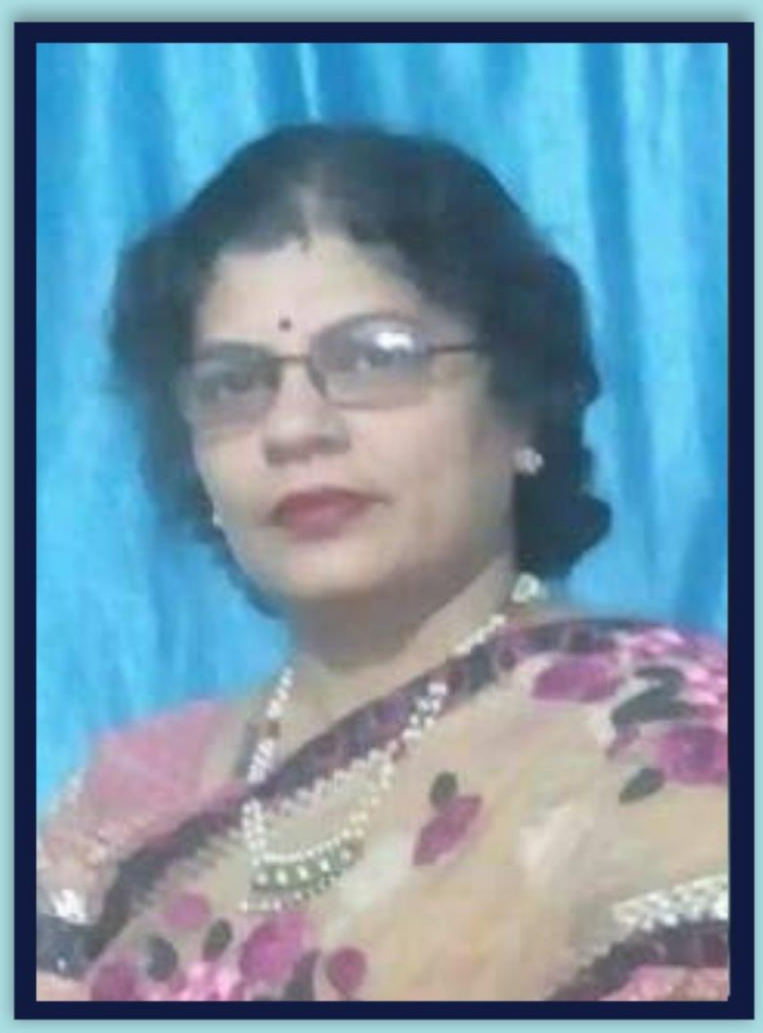

केन्द्रीय रचनाकार

● कल्पना भट्ट

सृजक-सृजन-समीक्षा

कल्पना भट्ट

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,
इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये
आवरण: मृदुल जोशी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

कल्पना भट्ट का परिचय

नाम - कल्पना भट्ट

जनमतिथि -8 जनवरी 1966

पति का नाम - प्रमोद भट्ट

पता : श्री द्वारकाधीश मन्दिर

चौक बाज़ार , भोपाल

मध्य प्रदेश 462001

मो. 9424473377

व्यवसाय : गृहिणी

शिक्षा : दसवीं तक की पढ़ाई मुम्बई में हुई

बी कॉम 1984-85 पुणे विश्वविद्यालय से

बी ऐड : 1995 -96 बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय ।

एल एल बी : 2007 हमीदिया लॉ कॉलेज भोपाल

एम ए (अंग्रेजी) 2013

साहित्यिक रचनायें : अंग्रेजी और हिंदी में कविता , लघुकथा , कहानी । हिंदी में संस्मरण , बाल कथा एवम् बाल कवितायेँ (हिंदी , अंग्रेजी)

उपलब्धियां : 2016 - शब्द शक्ति सम्मान

प्रतिलिपी .कॉम की प्रतियोगिता -तस्वीरें बोलतीं है में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

प्रकाशन : विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में रचनाएँ छपी हैं ।

भोपाल के दैनिक अख़बार - लोकजंग

पत्रिका : दिग्दर्शक , मृगमरीचिका , सत्य की मशाल ,

इ पत्रिका : जय विजय , चन्द्रा टाइम्स (अंग्रेजी रचनाएं) , प्रतिलिपी .कॉम , शब्दनगरी , इत्यादी ।

आत्मकथ्य

माँ बताती हैं सबसे पहली रचना मैंने तीसरी में लिखी थी । उस दौरान एक प्लेन क्रैश हुआ था जो समुद्र में डूब गया था । इसिपर मेरी प्रथम रचना हुई थी । ज्यादा याद नहीं पर जब भी मन में कोई भाव आते थे उसको शब्द देने की कोशिश किया करती थी । बचपन में किताब पढ़ने का शौख था , सो पढ़ा करती थी ।

समय का चक्र चला और सब कुछ छूट गया ।

शादी के बाद अपने ही बच्चों की किताबों में कुछ कुछ लिख दिया करती थी ।

2010 से फेसबुक पर लिख रही थी । 2015 में फेसबुक पर लघुकथा के परिंदे से जुडी और अन्य ग्रुप्स से भी जुडी और लेखन करने का प्रयास कर रही हूँ ।

कल्पना भट्ट

"सृजक का सृजन"

पुकार अंतर्मन की

सुनती हूँ पुकार अंतर्मन की
कहती है यह छल करती हो
अपनों से बेगानों से प्यार करती हो
नहीं ज़माना प्यार को जानता
प्यार की आड़ में है खंजर घोपता
क्यों करते हो व्योवहर ऐसा
खुद ही फिर निराश होते हो
कहता है वो अक्सर यही
लगाओ मुखौटे दूसरों की तरह
जीयो तुम भी औरों की तरह
तरकश में अपने भी तीर रखो
लगे अगर तो छोड़ देना तुम
एक तीर से निशाना बाँध लेना तुम
सुनकर यह पुकार
कांप गए हम
कैसा कुरूप हुआ है यह अंतर्मन
सोच में हूँ आज भी
अलग क्यों है मुझसे मेरा अंतर्मन ।

गोरैया

एक पल नही , गुज़रता कभी
मन विचलित हो जाता
सूरज भी चन्दा भी है
सितारें भी हैं अपनी जगह
फिर क्या हुआ है ऐसा
जो मन विचलित हो जाता
दूर गयी गोरैया घर से
चहकती थी घर आँगन में
क्यारियाँ खिल उठती थी
उसकी एक मुस्कान से
दूर हुई है जब से वह
सूख गयी हैं क्यारियाँ भी
तितली रूठी , भँवरे रूठे
ना आये अब कोई बगिया में
सुना आँगन राह है तकता
मौसम कभी तो बदलेगा
लौट आएगी घर की गोरैया
यह आँगन फिर महकेगा ।

सत्य

एक राह चलने की ख्वाहिश
फ़ूल मिले या मिले काँटे
कठिन डगर होगी सुना है
चलूँगी फिर भी इसी डगर से ।

हैं सामने पर्वत विशाल
कई नदियों को करना है पार
सघन वन अब रिश्तों के बने है
जिसमें होते है कितने ही वार ।

नहीं डरूँगी तय किया है
अपने कदमो को न बहकने दूंगी
चलूँगी मैं उसी राह पर
जिस राह पर सत्य की मशाल होगी ।

वामांगी

वामांगी जब है बन जाती
तो क्या इंसान नहीं रह जातीं
कान इनके हैं बढ़ जाते
आँखे नम हो ही जाती
पत्नी को तो कहते लक्ष्मी आयी
पर औरत को कहा जाता हरजाई
हर औरत नारी ही होती
पर नारी भी इंसान है होती ।
थी पहले क़ैद घरों में
सालो साल रहीं पिंजरे में
तब भी नर खुश न था उनसे
कहता था काम करो बराबर से
काँधे से काँधा मिलाओ
घर की देहलीज पार कर आओ
देखो तुम हो अर्धांगिनी मेरी
तुम हो शक्ति तुम चामुंडिनि
क्या ये सिर्फ आडम्बर था
पुरुषों का किया कोई छल था ?
पर्दा गया , आँखों का हिजाब
आया
फिर भी हर दूसरा मर्द रहा
पराया
पुरुष के चलते रहे हैं हथ कण्डे
नारी पर चलते रहें शब्दों के डंडे
अब नारी भी लगी है बोलने
अपने अधिकारों के लिए लगी है
लड़ने
अब भी पुरुष खुश नहीं है
नारी तो हर हाल में बुरी है ।

एक पुकार

मेरे गर्भगृह में
घर्षण होता रहता है
निरंतर बिना रुके
बड़ी बड़ी चट्टानें
टकराती है
कभी अंदर ही अंदर
होती है प्रज्वलित आग
जो जला देती है मुझको
पर ये नियति है मेरी
मथि जा रही हूँ
वर्षो से
देती चली आ रही हूँ
निरंतर कुछ नया हमेशा से
क्या चाहती हूँ
मेरे उन बच्चों से
क्या वे जानते भी है
मेरे अंदर के घर्षण को
क्या वोह समझते होंगे
नहीं कोई शिकायत है
मुझको उन सब से
पर पुकार क्या मेरी
सुनाई देती होगी उनको भी
मेरे भीतर भी हैं
भावनाएं
ममत्व को निभाती चली आ रही
हूँ
पर क्या मेरे बच्चे मुझे
अपनी जननी मानते भी है
बताओ कैसे लगाऊँ पुकार
किसको लगाऊँ पुकार ?

यादें कहीं स्वप्न तो नहीं

यादें कहीं स्वप्न तो नहीं
बीते हुए कल की यादें
साथ बिताएं पल की यादें
पर...
आज वे यादें स्वप्न ही तो हैं
जो हकीक़त थीं कल
आज यादें बन सामने आती हैं
यादों को गर याद करें तो
आज से कितनी भिन्न लगती है वे
साथ साथ बिताएं पलों की सौगात
लगती है यह
पर
आज दो किनारों की तरह
नज़र आ रही है
कल और आज के बीच
एक लम्बी राह, एक लम्बा समय
अंतराल
क्या कहों उनको
तुम ही बता दो
कल जो अपनी बातों से
अपने होने का एहसास करवाते थे
पर
आज खामोश हो गए हो
दूर से बस देखती रहती हूँ
ध्रुव तारा बन जाने को दिल करता है
तब
शायद कभी तुम देखलोगे
और मैं एक स्वप्न बन
इन यादों का हिस्सा बन जाउंगी
पर
आज तो तुम भी हो
मैं भी वहीँ हूँ
पर बीच में हैं
ये यादें और एक स्वप्न .....

स्त्री पुरुष होने का हाहाकार

स्त्री हूँ मैं
क्या सिर्फ यही पहचान होगी
नहीं
मैं सिर्फ एक स्त्री तो नहीं
एक इंसान हूँ
सर्वप्रथम एक इंसान
नाक नक्ष अलग हुए तो क्या
सब कुछ है जो
एक इंसान का होता है |
फिर एक स्त्री ही क्यों
क्या पुरुष रह पाता
बिना स्त्री के
या स्त्री का परिचय
क्या हो पाता
बिना पुरुष के |
मैं खजुराहो में हूँ|
अजंता की मूरत हूँ मैं
मेरे कजरारे नैनो ने हमेशा
तुमको पुकारा है
और तुमने ही सजाया है
मुझे अपने प्रेम रस से
फिर में स्त्री हूँ |
यह परिचय करवाया है |
पर तुम पुरुष हो
दोनों अलग होते हुए भी
कब अलग हो सके
सृष्टि निर्माण में
क्या हम दोनों पूरक नहीं
तुम खुद को पुरुष कहते हो
और मैं खुद को स्त्री
पर हम दोनों एक दुसरे के पूरक
अधूरे हैं एक दूजे बिन
क्या सृष्ठी अधूरी न होगी
हम दोनों के बिना
या किसी एक के ही अस्तित्व से
हम इंसान है पहले
या हैं हम एक पुरुष और स्त्री
कौन जाने कौन पहचाने
क्यों हल्ला करते है हम स्त्री पुरुष
होने का ?
क्या चाहते हैं हम ?

"सृजन की समीक्षा"

1.

कल्पना जी...

आपकी रचनाओं ने तो झकझोर कर रख दिया.. नारी संवेदना और अंतर्मन की पीड़ा को शब्द देने में आपकी कलम सक्षम है...

प्रत्येक रचना मन मष्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ती है... कुछ ज्वलन्त प्रश्न पूछती हुई रचनाएं पढ़कर ऐसा लगता है कि यह यक्ष प्रश्न है जो समाज मे पूछे जाना चाहिये... आपकी रचनाओं में एहसास और ज़ज़्बात दोनों के दर्शन होते है... **आपको बहुत बहुत शुभ कामनायें...**

पुकार अंतर्मन की...

क्यों करते हो व्यवहार ऐसा खुद ही फिर निराश होते हो..

गौरैया.....

एक पल नही, गुजरता कभी
मन विचलित हो जाता है

सत्य...

एक राह चलने की ख्वाईश
फूल मिले या मिले काँटे
कठिन डगर होगी सुना है
चलूंगी फिर भी इसी डगर से

वामांगी....

क्या ये सिर्फ आडम्बर था
या पुरुषों का किया कोई छल था ?

एक पुकार

बताओ कैसे लगाऊं पुकार
किसको लगाऊँ पुकार ?
यादें कहीं स्वप्न तो नहीं
बहुत सुन्दरता से रची रचना
स्त्री पुरुष होने का हाहाकार

कटु सत्य,..
पुनः उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामनाओं के साथ अंतरा एडमिन समूह को धन्यवाद जो आज केंद्रीय पोस्ट दिवस पर समर्थ लेखिका से हमे मिलवाया..

कैलाश सिंघल..."केसू"

2.

आदरणीय कल्पना भट्ट जी को सादर प्रणाम और अंतरा की केन्द्रीय पोस्ट में हार्दिक अभिनंदन... आपकी रचनाऐं पढ़ी ,बहुत अच्छी लगी | आपकी सभी रचनाओं में चिंतन के स्वर मुखरित हुए है ,वह चिंता चाहे मानवीय स्वभाव के परिवर्तन से संबंधित हो चाहे प्रकृति और जीवों के प्रति या फिर नारी के अधिकारों के प्रति..... सभी जगह आपने यथार्थवादी दृष्टिकोण का बखूबी वर्णन किया है.....
"एक पुकार" ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया जिसमें आपने पृथ्वी का मानवीकरण अलंकार में व्यथित चित्रण किया है ,जो समय की माँग भी है......बहुत बहुत बधाई !!
उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ.....

डॉ० प्रदीप कुमार "दीप"

3.

सप्ताह के कवि के रुप में कल्पना जी का स्वागत है,...आत्मकथ्य से जान पड़ता है कि बालपन से ही आप साहित्य के स्वर में ढली है,...
अनुपम..
आपकी रचनाएँ
पुकार अंतर्मन की , बेहतरीन रचना परन्तु वर्तनी की अशुद्धि सौन्दर्य बिगाड़ रही हैं,

दूसरी रचना गौरया और तीसरी रचना सत्य दोनों ही बेहतर है...
शब्दचयन अच्छा हैं |

चौथी रचना वामांगी सत्य और सटीकता का सुंदर समावेश दर्शा रही हैं|
पांचवी रचना **एक पुकार**
जिसकी पंक्तियाँ
// मेरे गर्भगृह में
घर्षण होता रहता है
निरंतर बिना रुके
बड़ी बड़ी चट्टानें
टकराती है //

सहज रुप से गहरी बात को सरल शब्दों में कह दिया आपने...

छठवी रचना **यादें कहीं स्वप्न तो नहीं**
बहुत सुन्दर

सातवी रचना **स्त्री पुरुष होने का हाहाकार** अच्छा प्रश्न उठाती रचना

बेहद ही सुन्दर और यथार्थवादी रचनाएं |

आप इसी तरह लेखन के नए बिंबों का प्रकाशपुंज बनें, यही शुभेच्छा है|

संजय जैन कोचर

4.

आ. कल्पना जी से व्यक्तिगत परिचय भोपाल के ही आयोजनों में और अन्तरा-शब्दशक्ति सम्मान समारोह में हुआ। उनका व्यक्तित्व और रचनाएँ बिल्कुल एक सी हैं।

कहीं आक्रोश, कहीं प्रेम, कहीं सवाल, कहीं जवाब, कहीं यादें, कहीं बीते समय की समीक्षा, कहीं अच्छे समय की प्रतीक्षा,.. ये स्त्रीत्व और व्यक्तित्व दोनों को ही परिभाषित करती रचनाओं की रचनाकार हैं।

सतत आगे बढ़ती रहें और नये आयाम गढ़ती रहें।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

कीर्ति वर्मा, बाबई (मप्र)

5

आ. कल्पना जी...

आपकी रचनाओं में आपका स्त्री मन तो झलकता है पर साथ ही आपने मानवता की परिभाषा को भी सामने लाकर रख दिया..

नारी संवेदना और हर एक के अंतर्मन की व्यथा प्रकट करती रचनाएँ...

प्रत्येक रचना हर भावुक मन पर गहरी छाप छोड़ जाएगी,..

पुकार अंतर्मन की...

एक ऐसी पुकार जो सुनी जानी चाहिए, चाहे विधाता सुने या समाज

गोरैया.....

मार्मिक रचना,... क्या सचमुच लौट आएगी गौरैया?

सत्य...

समाज और मानवता के हितार्थ अच्छा निर्णय

वामांगी....

शायद सच में एक आडम्बर ही था,..

एक पुकार

बहुत ही सुंदर रुको से समृद्ध और भावपूर्ण रचना एक यक्ष प्रश्न सी,...

यादें कहीं स्वप्न तो नहीं

कोमल एहसासों से बुनी गर्म नर्म चादर सी,.. सुंदर रचना

स्त्री पुरुष होने का हाहाकार

कटु सत्य,..

सच यही हाल है

बवाल ही बवाल है

लेखनी सतत चलती रहे और एक सृजन समीक्षा आप जैसे लघुकथाकार की भी हो ये हार्दिक इच्छा है मेरी क्योंकि मैं जिन कल्पना जी से प्रत्यक्ष मिली हूँ वो एक भावुक मगर सिद्धस्थ लघुकथाकार भी है।

पुनः उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामनाओं के साथ

प्रीति सुराना

वारासिवनी (मप्र)

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।
'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा।
अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com